दैनिक ज.गरण गोरखपुर, १३ फरवरी, १९८८ (२)

'कथा एक कंस की' का मंचन

गोरखपुर,। हिन्दी नाट्य लेखन और आज के व्यावसायिक समय के बीच हिन्दी रंगमंच की स्वतंत्रता और संघर्ष के सवालो से जूझते हुये रूपांतर नाट्य मंच गोरखपुर ने हमेशा की तरह इस बार भी हिन्दी की सशक्त नाट्य कृति 'कथा एक कंस की' को प्रस्तुति के लिये चुना। गत ११ फरवरी को विश्वविद्यालय प्रेक्षाग्रह में सुप्रसिद्ध हिन्दी नाट्यकार एवं सांस्कृतिक कार्यविभाग उ.प्र. के निदेशक डा. दया प्रकाश सिन्हा के इस नाटक का मंचन प्रबुद्ध विद्वानों, बुद्धिजीवियों और युवा छात्रों के बीच हुआ।

निर्देशिका डा. श्रीमती गिरीश रस्तोगी के अनुसार हिन्दी नाटक और रंगमंच को इस समय मात्र लोकरंजनीय फार्मूला और व्यवस्था विरोधी नीतियों और नारों में जकड़े साहित्य से मुक्त बाद व्यापक तथ्य एवं शिल्प की संभावनाओं की तलाश बहुत जरूरी है। दया प्रकाश सिन्हा के कई नाटकों में से यह नाटक प्रसिद्ध साहित्यकार और नाट्य समीक्षक नेमिचन्द्र जैन तथा रंगकर्मियों के द्वारा चर्चित और प्रतिष्ठित हो चुका है लेकिन इधर [illegible] प्रभावों, अनुकरणों, लोकशैली की धूम और अन्य कई [illegible] के कारण यह नाटक प्रस्तुतीकरण की प्रतीक्षा [illegible] था।

निर्देशक और अभिनेता होने के कारण दया प्रकाश सिन्हा के इस नाटक में नाटकीय आरोहवरोह और तनाव की संभावनाएं मौजूद हैं। डा. गिरीश रस्तोगी ने बिना किसी शैलीगत आग्रह के इसके मंचन की परिकल्पना की और कंस को एक प्रवृत्ति के रूप में लेते हुये वेशभूषा की कल्पना में स्वतंत्रता से काम लियाश प्रायः रावण, हिटलर, हिरण्यकश्यप, कंस सबके संकेत उभरतेथे। कंस की भूमिका में सुनील पुष्करण ने कंस के चरित्र की अस्थिरता, अनिश्चय, भय आतंक, दुर्बलताओं और उसके अंदर छिपी स्वाभाविक कोमलता-संबंधों की भाव संपदा को बखूबी अभिव्यक्त किया।